2 जून 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख. शांति. समृद्धि

प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 5 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जून (प्रथम), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित -

53वें शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन

सूरत (म.प्र.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं अपूर्व अवसर शिविरों की शृंखला में निजात्मकल्याण आध्यात्मिक शिविर समिति, सूरत द्वारा आयोजित 53वें श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण -प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन समारोह दिनांक 19 मई को सम्पन्न हुआ।

सर्वप्रथम जिनेन्द्र शोभायात्रापूर्वक जिनेन्द्र भगवान को पाण्डाल में निर्मित अस्थायी जिनमंदिर में विराजमान किया गया। रथयात्रा में श्रीजी को लेकर चलने का सौभाग्य श्री शांतिकुमारजी ललितकुमार रारा परिवार सूरत को प्राप्त हुआ; रथ के सारथी श्री लक्ष्मीचंद जैन (सीकर वाले) जयपुर एवं कुबेर इन्द्र श्री टी.सी. जैन (भरतपुर वाले) जयपुर थे।

शिविर के ध्वजारोहणकर्त्ता मुमुक्षु मण्डल बोरीवली मुम्बई थे। शिविर के उद्घाटनकर्ता श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल जयपुर व श्री संजयजी दीवान सूरत थे। प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री नितिन ज्ञानचंद शास्त्री, विनोद ज्ञानचंद शास्त्री, प्रियांश शास्त्री एवं ठाकुर परिवार सूरत भिण्ड, मंच उद्घाटन श्री भरतभाई मेहता ज्ञायक परिवार, सूरत तथा सिंहद्वार का उद्घाटन श्री जुगलकिशोर कपूरचंद कैलाशचंद अशोककुमार राहुल अभिनव श्रेणिक सिद्धार्थ अनुपम छाबड़ा परिवार सूरत द्वारा संपन्न हुआ। सभी उद्घाटन कार्य पण्डित पीयूषजी शास्त्री द्वारा कराये गये।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री रश्मिकांतभाई परीख सूरत एवं विशिष्ट अतिथि श्री टी.सी. जैन (भरतपुर वाले) जयपुर, डॉ. सुभाषजी चांदीवाल, श्री सुभाषभाई कोटडिया, श्री बी.डी. जैन, श्री अजितभाई मेहता अहमदाबाद उपस्थित थे। साथ ही विद्वत्गणों में डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी सूरत, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई मंचासीन थे। प्रशिक्षण कक्षा के अध्यापकगण अग्रिम पंक्ति में विराजमान थे।

सर्वप्रथम पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने प्रशिक्षण शिविरका सामान्य परिचय दिया। प्रशिक्षण शिविर संबंधी सूचनाएं पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने दी। स्वागत भाषण श्री अजितभाई बड़ौदा ने दिया। अतिथियों का स्वागत प्रकाशचंदजी छाबड़ा (अध्यक्ष), संजयजी दीवान (महामंत्री), विशुभाई जैन (कार्याध्यक्ष), अजितजी जैन बड़ौदा (स्वागताध्यक्ष), भरतभाई मेहता (कोषाध्यक्ष), विनोदजी छाबड़ा (स्वागतमंत्री) आदि शिविर आयोजन समिति के पदाधिकारियों द्वारा किया गया।

इसी अवसर पर आचार्य कुन्दकुन्द के चित्र का अनावरण श्री निर्मल कुमार सुरेशकुमार प्रकाशचंद छाबड़ा परिवार सूरत, आचार्य अमृतचंद्र के चित्र का अनावरण श्री वीरेश रश्मि सम्यक् अनुश्री कासलीवाल परिवार सूरत, पण्डित टोडरमलजी के चित्र का अनावरण श्री निशांत मलैया सूरत सागर एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के चित्र का अनावरण मनसाबेन वासुदेवभाई दामानी परिवार, उषाबेन ज्योत्सनाबेन विक्रमभाई, जिनेशभाई पारसभाई जागृतिबेन नीताबेन सेजलबेन परिवार, सूरत द्वारा संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने वक्तव्य में "वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर" नाम की सार्थकता बताते हुये इस शिविर का महत्व बताया।

सभा का संचालन पण्डित परमात्मप्रकाशजी ने किया। मंगलाचरण वीजलबेन कोटडिया सूरत ने, स्वागत गीत पाठशाला के बच्चों द्वारा एवं दैनिक कार्यक्रमों की रूपरेखा डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने प्रस्तुत की।

शिविर में योगसार विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री नेमीचंद अमितकुमार अनिता बड़जात्या परिवार सूरत, द्रव्यसंग्रह विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री वीरेश-रश्मि, सम्यक्-अनुश्री कासलीवाल सूरत जयपुर एवं अष्टपाहुड विधान के आमंत्रणकर्त्ता व उद्घाटनकर्त्ता श्रीमती निशा, भारती, राहुल एवं हिमांशी जैन परिवार सूरत हैं।

शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्राविकारत्न स्व. श्रीमती कंचनदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री धर्मचंदजी दीवान सुपुत्र श्री विद्याप्रकाश-सुनीतादेवी, संजयकुमार-रेखा, अजय, पौत्र-पौत्री विजय-चांदनी, अरिहंत-पूजा, तीर्थेश, मोक्षा, वेरोनिका, रेयांश छाबड़ा दीवान परिवार सूरत (सीकर वाले) हैं। शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्री महेन्द्रकुमारजी राहुलजी गंगवाल परिवार जयपुर एवं श्री अजितप्रसादजी वैभव जैन दिल्ली हैं।

विधि-विधान के समस्त कार्य श्री भरतभाई मेहता के निर्देशन में पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री, जिनेन्द्रजी शास्त्री, अनेकान्तजी शास्त्री एवं वीकेशजी शास्त्री द्वारा संपन्न किये जा रहे हैं। ●

सम्पादकीय –

धर्म, परिभाषा नहीं प्रयोग है

1 – पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

किसी भी विषय को व्यक्त करने का माध्यम एकमात्र भाषा ही है, जब किसी भी वस्तु को या उसके भाव को व्यक्त करने के लिए उसे सुव्यवस्थित, निर्दोष व सुन्दर भाषा का स्वरूप प्रदान किया जाता है तो उसे ही परिभाषा कहते हैं।

अध्ययन–अध्यापन के सभी क्षेत्रों में अपने कुछ पारिभाषिक शब्द होते हैं, कुछ परिभाषाएँ होती हैं जो अपने निश्चित व सीमित अर्थों से जुड़ी होती हैं उनका मनमाने ढंग से अर्थ नहीं किया जा सकता। जैसे कि 'दर्शन' शब्द का अर्थ अवलोकन भी है और श्रद्धान भी किन्तु जैनदर्शन के मोक्षमार्ग के प्रकरण में सम्यक्‌दर्शन का अर्थ भले प्रकार अवलोकन न होकर तत्त्व–श्रद्धान और आत्म अनुभूति ही होता है।

इसीप्रकार जैनधर्म के क्षेत्र में अनेक पारिभाषिक शब्द और परिभाषाएँ निश्चित हैं। जिनके माध्यम से धर्म का स्वरूप ज्ञात किया जाता है किन्तु परिभाषाएँ याद कर लेना स्वयं धर्म नहीं है, बल्कि उन परिभाषाओं में जो बात कही गई है, उसका जीवन में प्रयोग करना धर्म है।

हमसे कोई पूछे ''धर्म क्या है''? हम तुरन्त उत्तर दे सकते हैं –

''यः सत्वान् उत्तमे सुखे धरति सः धर्मः।'' अर्थात् जो प्राणियों को संसार के दुःखों से निकाल कर उत्तम सुख प्राप्त कराये वह धर्म है। ''वत्थु सहावो धम्मो'', अर्थात् वस्तु का स्वभाव धर्म है। ''दसंणमूलो धम्मो'', ''चारित्तं खलु धम्मो'' आदि और भी जो–जो परिभाषाएँ शास्त्रों में हैं और हमने पढ़ी हैं, उन्हें हम एक श्वांस में कह जायेंगे, क्योंकि ये सब परिभाषाएँ हमने शास्त्रों में पढ़ ली हैं, याद कर ली हैं।

इसी तरह अहिंसा, अनेकान्त, स्याद्वाद, नय प्रमाण, निक्षेपादि तथा द्रव्य–गुण–पर्याय, साततत्त्व, नवपदार्थ तथा गुणस्थान, मार्गणास्थान, प्राण, पर्याप्ति आदि सभी सिद्धान्तों की भी हम सूक्ष्म से सूक्ष्म चर्चा कर सकते हैं, बड़ी–बड़ी धर्म–सभाओं को भी सम्बोधित करना कोई बड़ी बात नहीं है; किन्तु आत्मानुभूति के अभाव में ये सब वाग्‌विलास ही हैं, क्योंकि धर्म का शुभारम्भ भेदविज्ञान और स्वानुभूति से ही होता है। स्वानुभूति ही मोक्षमार्ग का प्रथम प्रयोग है और इसके बिना धर्म की परिभाषाएँ कोई अर्थ नहीं रखती।

पण्डित टोडरमलजी ने भी मोक्षमार्ग प्रकाशक के सातवें अध्याय में स्पष्ट लिखा है – ''जिन शास्त्रों से जीव के त्रसस्थावरादि रूप तथा गुणस्थान, मार्गणादि रूप भेदों को जानता है, अजीव के पुद्‌गलादि भेदों को तथा उनके वर्णादि विशेषों को जानता है; परन्तु अध्यात्म शास्त्रों में भेदविज्ञान को कारणभूत व वीतराग दशा होने को कारणभूत जैसा निरूपण किया है वैसा नहीं जानता।

किसी प्रसंगवश उसी प्रकार जानना भी हो जावे तब शास्त्रानुसार जान तो लेता है; परन्तु अपने को आप रूप जानकर पर का अंश भी अपने में न मिलाना और अपना अंश भी पर में न मिलना – ऐसा सच्चा श्रद्धान नहीं करता है। जैसे अन्य मिथ्यादृष्टि निर्धार बिना पर्यायबुद्धि से जानपने में व वर्णादि में अहंबुद्धि धारण करते हैं, उसी प्रकार यह भी आत्माश्रित ज्ञानादि व शरीराश्रित उपदेश, उपवासादि क्रियाओं में अपनत्व मानता है। कभी शास्त्रानुसार सच्ची बात भी बनाता है परन्तु अंतरंग निर्धार रूप श्रद्धान नहीं है अतः इसे सम्यक्त्वी नहीं कहते।''

इससे स्पष्ट है कि धर्म मात्र परिभाषाओं में ही सीमित नहीं, बल्कि वस्तु स्वरूप की सही प्रतीतिपूर्वक एक, अभेद, अखण्ड, त्रैकालिक, शुद्ध, ज्ञायक स्वभावी निजात्म तत्त्व को जानने में, पहचानने में, उसी में जम जाने, समा जाने में हैं। साथ ही साथ अविनाभावीरूप से रहने वाला बाह्याचार भी उसमें आता ही है।

परिभाषाएँ तो हम से भी कहीं अधिक अच्छी टेप–रिकार्ड भी सुना सकता है तो क्या वह भी धर्मात्मा हो जाता

है? उसमें आत्मा है ही कहाँ जो धर्मात्मा कहलाये?

दूसरी ओर जो मिथ्यादृष्टि ग्यारह अंग के पाठी तक होते हैं, क्या उन्हें ये सब परिभाषाएँ नहीं आती होगी? क्यों नहीं, अवश्य आती हैं। तो फिर आत्मानुभूति के बिना वे कोरे के कोरे क्यों रह जाते हैं? उन्हें धर्म लाभ क्यों नहीं होता? इससे भी स्पष्ट है कि धर्म परिभाषाओं में नहीं, प्रयोग में है और उसका आरम्भ आत्मानुभव से होता है।

भगवान महावीर के जीव ने सिंह की पर्याय में परिभाषाएँ नहीं रटी थीं, न उसे कोई भाषण देना ही आता था; किन्तु मुनिराज का सम्बोधन प्राप्त कर भेदविज्ञान हो गया था, भेदविज्ञान होते ही आत्मानुभूति हो गई और जीवन में धर्म का शुभारम्भ हो गया; बारम्बार वस्तु स्वरूप का विचार किया। मन में क्षणभर को विश्रान्ति पाकर अतीन्द्रिय आनन्द का अनुभव किया। बनारसीदासजी के शब्दों में कहें तो –

''वस्तु विचारत ध्यावतें, मन पावे विश्राम।
रस स्वादत सुख ऊपजे, अनुभव ताको नाम।।''

ऐसा अनुभव करते हुए उसे कालान्तर में संसार-शरीर और भोगों से भी विरक्ति भी हुई, फिर क्या था मांसाहार का त्यागकर व सूखे पत्तों को खाकर और झरने का प्रासुक जल पीकर अनुभव के रस में झूलता हुआ अपना शेष जीवन बिताने लगा। ऐसे अनुभव की महिमा का वर्णन करते हुए पं. बनारसीदासजी स्वयं लिखते हैं –

''अनुभव चिन्तामणि रतन, अनुभव है रसकूप।
अनुभव मारग मोक्ष को, अनुभव मोक्ष स्वरूप।।''

इसका अर्थ यह न लगाना चाहिए कि परिभाषाएँ सीखना निरर्थक हैं या शास्त्राभ्यास व्यर्थ बताया जा रहा है, राजमार्ग तो यही है कि पहले हम शास्त्रानुसार अभ्यास करके निर्णय करें, फिर आत्मानुसार उसे जीवन में उतारें, क्योंकि –

''आतम-अनात्म के ज्ञानहीन, जे-जे करनी तन करण क्षीण।''

भेदविज्ञान के बिना सारा श्रम व्यर्थ है।

एक आत्मानुभूति और आत्मध्यान के सिवाय पण्डित दौलतराम सब क्रियाओं को द्वंद-फंद कहते हैं। जगत के विषय-कषाय, धंधा-व्यापार, राजनीति की उठा-पटक तो दंद-फंद है ही, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में बुद्धि का व्यायाम भी दंद-फंद मानते हैं। तभी तो निज आत्मा के ध्यान की प्रेरणा देते हैं। अतः स्पष्ट है कि 'धर्म परिभाषा नहीं प्रयोग है।'

प्रयोग से मेरा अभिप्राय कोई बाह्य व्रत-त्याग या किसी वेश-विशेष के धारण कर लेने से भी नहीं हैं, ये सब तो अपनी भूमिकानुसार यथा अवसर आते ही हैं। यहाँ तो इतना प्रयोजन जानना कि जिनवाणी अनुसार सीखा है, परस्पर चर्चा-परिचर्या का विषय बनाया है तदनुसार उसकी प्रतीत व अनुभूति भी हो, वैसा ही हमें एहसास भी हो, हम वैसा महसूस भी करें, तद्‌रूप वैसा ही आंशिक परिणमन भी हो।

जैसे कि हम शास्त्रानुसार यह जानते हैं कि – ''एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्त्ता नहीं। हानि-लाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण सब स्वयंकृत कर्मों का ही फल है।'' इस शास्त्र ज्ञान के चिन्तन-मनन द्वारा आत्मा में समता और धैर्य धारण करें। प्रतिकूलता में आकुल-व्याकुल न हों।

अमितगति आचार्यकृत सामायिक पाठ में कहा भी है –

''स्वयं किये जो कर्म शुभाशुभ, फल निश्चय ही वे देते।
करें आप फल देय अन्य तो, स्वयं किये निष्फल होते।।
अपने कर्म सिवाय जीव को, कोई न फल देता कुछ भी।
पर देता है यह विचार तज, स्थिर हो छोड़ प्रमाद बुद्धि।।''

तथा ''पर्याय सब क्रमनियमित व क्रमबद्ध ही होती हैं।

''जो जो देखी वीतराग ने, सो-सो हो सी वीरा रे।
अनहोनी होसी नहीं कबहूँ, काहे होत अधीरा रे।।''

तथा च ''संयोग का वियोग निश्चित है। पर्यायें परिणमनशील हैं, आत्मा अजर-अमर अविनाशी है; धनादि बाह्यनुकूल संयोग परिश्रम से नहीं पुण्योदय के निमित्त से प्राप्त होते हैं, रोगादि भी पापोदय के दुष्परिणाम हैं।'' ऐसे विचार को आचरण में लें, इससे जीवन में सुख-शांति का संचार होता है।

तात्पर्य यह है कि जब जीवन में प्रतिकूल परिस्थितियाँ निमित्त हों ऐसे अवसर पर हम उक्त सिद्धान्तों को जिन्हें शास्त्रानुसार जानते हैं उन्हें आत्मानुसार प्रतीति में लेकर निराकुल रहने का प्रयास करें। **(क्रमशः)**

पद्यात्मक विचार बिन्दु

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

प्रस्तुत पदों में हमारे विचारों, आचरण और व्यवहार में पायी जाने वाली विसंगतियों की ओर ध्यान दिलाते हुए कुछ ऐसे विचार बिन्दु प्रस्तुत किये गये हैं, जिन पर यदि गंभीरतापूर्वक गहराई से विचार किया जाये तो न सिर्फ हमारी विचारधारा में आमूलचूल परिवर्तन होगा वरन् निश्चित ही हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। विचारशील पाठकों से अपेक्षा है कि इसका लाभ अवश्य लेंगे। अगले कुछ अंकों तक यह क्रम जारी रहेगा।

अब तू निरंतर ध्यान धर, निजआत्म का कल्याण कर,
अवसर मिले तो और को, इस मार्ग में तू साथ कर।
भटके जनों को सन्मार्ग देना, यह बड़ा उपकार है,
इस मार्ग पर जो चल पड़ा, उसकी सदा जयकार है।।९७।।

(मन्नतें मांगने के संदर्भ में....)

जितना भरोसा और का, उतना नहीं भगवान का,
और तो सन्मुख खड़े, किसको पता भगवान का।
चतुराई पूरी कर स्वयं, मढता भगवन के नाम पर,
मुंह ढांक के सोता स्वयं, लगा भगवान को काम पर।।९८।।

जो मांग लेगा पायेगा, ना मांगता रह जायेगा,
पता न था भगवान भी बस, मांगना सिखलायेगा।
सच है यही तो यह सही, न कुछ चाहिये भगवान से,
भिक्षुक नहीं बनना मुझे, भगवान तेरे नाम से।। ९९।।

सर फोड़ते, काटें गले, ये इंसान हो इंसान के,
बलिदान पशुओं का करें ये, धर्म ही के नाम से।
पलते यहाँ सब पाप ही, भगवान तेरे नाम से,
ना रोक सकते तुम यदि, भगवान तुम किस काम के।।१००।।

भक्ति नहीं व्यापार है इन, मन्नतों का मांगना,
दृष्टि नहीं हो गुणों पर बस, लाभ की हो कामना।
रे भक्ति तो भगवान की, भगवान का अनुसरण है,
अनुसरण उनका मुक्ति है, वो शिव रमा का वरण है।।१०१।।

रे भक्ति नहीं है दीनता, भक्ति नहीं अज्ञान भी,
जो स्वरूप समझे नहीं तो, स्तुति भी किस काम की।
कौन तू भगवान हैं क्या, इसका यदि अविचार है,
भगवान कैसा भक्ति कैसी, यह एक भ्रष्टाचार है।। १०२।।

वंदना कर तीर्थ की तू, मन्नतें ही मांगता,
देव हो कोई भी तू बस, स्वार्थ ही पहिचानता।
जो देव सबसे अधिक दे, बस उसी की जयकार है,
भ्रम है इसे ही धर्म गिनना, यह भीख या व्यापार है।।१०३।।

ना धर्म है ना भक्ति यह, यह तो निरा व्यापार है,
मांग पूरी जो करे, भगवान वह स्वीकार है।
यूं नहीं इज्जत जगत में, नकद सब व्यापार है,
एक इस भगवान के घर, हर भक्त का ही उधार है।।१०४।।

यदि काम होगा तो करूंगा, भेंट यह भगवान मैं,
यह शर्त तेरी बताती, कितनी भक्ति है भगवान में।
क्या शर्त ऐसी रखी तूने, जग के किसी हुक्काम से,
विश्वास नहीं भगवान का, शिकवा नहीं इन्सान से।।१०५।।

यदि एक ले सौ देवेगा, तब क्यों न कोई सर झुके,
व्यापार है यह भक्ति नहीं, क्यों स्वयं को छलता मुए।
कर–करके नित खटकर्म ये, खुद को गिने धर्मात्मा,
खुद को ही छलता स्वयं तू, यूं भोला नहीं परमात्मा।।१०६।।

संसार में सुख खोजता, संसार दुःख का नाम है,
संसार में दुःख संसार दुःख, दुःख संसार में अविराम है।
मैं एक हूँ पर हैं अनंते, अनन्त उनका परिणमन,
विराम ना विश्राम ना, कब किसको मिली पर में शरण।।१०७।।

नित देह का पोषण करे, पर देह तेरी कब हुई,
व्याधियाँ पैदा करे, प्रत्येक दिन प्रतिपल नई।
इस तरह का व्यवहार क्या, मित्रवत व्यवहार है,
मित्र नहीं वह मैं नहीं, यह धोखा है संसार है।। १०८।।

(क्रमशः)

स्नातक प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न

सूरत (गुज.) : यहाँ 53वें आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 25 मई को प्रथम स्नातक प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

इसके अन्तर्गत **प्राकृत भाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु** राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित डॉ. योगेशजी शास्त्री लाडनूं, डॉ. सुमतकुमारजी शास्त्री उदयपुर; **पीएच.डी. उपाधि हेतु** डॉ. राजेन्द्रजी पाटील श्रवणबेलगोला, डॉ. संजयजी शाह बांसवाड़ा, डॉ. प्रमोदजी शास्त्री जयपुर, डॉ. वीरचंदजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. अंकितजी शास्त्री लूणदा; **नेट-जे.आर.एफ. उपलब्धि हेतु** वीरेन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा, ऋषभजी शास्त्री दिल्ली, निलयजी शास्त्री बरायठा, साकेतजी शास्त्री जयपुर; **शासकीय सेवा (अध्यापक) में चयन हेतु** संदीपजी शास्त्री बांसवाड़ा, पलाशजी शास्त्री बांसवाड़ा, अर्पितजी शास्त्री सेमारी, वैभवजी शास्त्री बांसवाड़ा, हर्षितजी शास्त्री खनियांधाना, सौरभजी शास्त्री फूप, नरेशजी शास्त्री भगवां, ऋषभजी शास्त्री भिण्ड, सचिनजी शास्त्री भगवां, दर्शितजी शास्त्री बांदा; **तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान हेतु** डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, विरागजी शास्त्री जबलपुर, संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, अनेकान्तजी शास्त्री उगार, मिथुनजी शास्त्री शिरगुप्पी, सौरभ-गौरवजी शास्त्री इन्दौर, सुदीपजी शास्त्री अमरमऊ, स्वानुभूति शास्त्री मुम्बई को सम्मानित किया गया।

इन 29 स्नातक विद्वानों का सम्मान सहस्राधिक स्नातकों के जनक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के करकमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में स्नातक परिषद् के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा के साथ-साथ अनेक आमंत्रित अतिथिगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ का -

दीक्षांत समारोह संपन्न

सूरत (गुज.) : यहाँ 53वें आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 25 मई को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा श्री वीतराग विज्ञान परीक्षा बोर्ड के अन्तर्गत संचालित श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ का दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया।

वर्ष 2018-19 में 17 विद्यार्थियों ने शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की एतदर्थ उन्हें तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा सिद्धांत विशारद की उपाधि से अलंकृत किया गया। इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित नीशूजी शास्त्री आदि विद्वत्जनों के साथ-साथ अनेक आमंत्रित अतिथिगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने किया।

बाल एवं युवा संस्कार शिविर संपन्न

(1) इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ सन्मति स्कूल नौलखा में दिनांक 28 अप्रैल से 6 मई तक जैन बाल एवं युवा संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर श्री प्रकाश-पूजा छाबड़ा, श्री विकास-सारिका छाबड़ा द्वारा निर्देशित उक्त शिविर में ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन, बार कोडिंग एटेन्डेन्स, स्मार्ट क्लासेज, एल.ई.डी. पर लाईव पूजा, स्मार्ट बोर्ड आदि के माध्यम से 2000 से अधिक बच्चों को जैनत्व के संस्कार दिये गये।

शिविर में 32 कक्षाओं में 43 विद्वानों द्वारा जिनेन्द्र अभिषेक, पूजन, बालबोध पाठमाला, छहढाला आदि विषयों का रोचक ढंग से अध्ययन कराया गया। विद्वानों के अन्तर्गत मनीषजी शास्त्री, अशोकजी शास्त्री, ब्र.राहुल भैया, अंकितजी सी.ए., सतीशजी कासलीवाल, सुरेन्द्रजी जैन, अंकुरजी शास्त्री, विवेकजी शास्त्री, संदीपजी जैन, ब्र.समता झांझरी, ब्र. आरती, रानी, एकता, सहजता, प्रियंका आदि का लाभ मिला।

(2) होशंगाबाद (म.प्र.) : यहाँ दिगम्बर परिवार एवं संपूर्ण तारण-तरण दिगम्बर जैन समाज के सहयोग से दिनांक 1 से 7 मई तक 5वें आवासीय बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित प्रदीपजी कुण्डा, पण्डित सुमितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित अनुभवजी शास्त्री सिलवानी, पण्डित अक्षयजी शास्त्री उभेगांव, पण्डित वीरअतिशयजी शास्त्री चौरई, आत्मार्थी अनुभूति जैन, विदुषी मीना दीदी एवं स्थानीय विद्वानों द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला। ब्र.सुधाबेन द्वारा निर्देशित इस शिविर में लगभग 250 बच्चों ने लाभ लिया।

(3) अजमेर (राज.) : यहाँ पुरानी मण्डी स्थित श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में 29वाँ ग्रीष्मकालीन आध्यात्मिक बाल, युवा व प्रौढ चेतना शिविर दिनांक 12 से 19 मई तक वैशाली नगर स्थित श्री ऋषभायतन अध्यात्मधाम में प्रात:काल एवं सीमंधर जिनालय में सायंकाल लगाया गया।

इस अवसर पर पण्डित अश्विनजी शास्त्री नानावटी व पण्डित अपूर्वजी शास्त्री द्वारा बाल कक्षा एवं पण्डित अभिषेकजी शास्त्री छिन्दवाड़ा द्वारा समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। शिविर में 62 बच्चों के अतिरिक्त 50 साधर्मियों ने लाभ लिया। **- प्रकाशचंद पाण्ड्या**

(4) खड़ैरी (म.प्र.) : यहाँ टोडरमल जैन युवा शास्त्री परिषद् एवं मुमुक्षु मण्डल खड़ैरी के तत्त्वावधान में दिनांक 10 से 17 मई तक बाल संस्कार शिक्षा शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित गुलाबचंदजी बीना, ब्र. महेन्द्रजी शास्त्री अमायन, पण्डित विक्रांतजी शास्त्री झालरापाटन, पण्डित रजतजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित समर्थजी शास्त्री विदिशा, पण्डित मयंकजी शास्त्री बण्डा द्वारा प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में लगभग 250 बच्चों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये। स्थानीय पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये। साथ ही

(शेष पृष्ठ 7 पर...)

आखिर हम करें क्या?

2

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

मुनिराजों के स्वरूप में ज्ञान (स्वाध्याय) और ध्यान को प्रमुखता दी गई हैं। आचार्य समन्तभद्र लिखते हैं –

''**ज्ञान–ध्यान–तपो रक्त तपस्वी स प्रशस्यते**[१]

ज्ञान, ध्यान और तप में लीन तपस्वी प्रशंसा योग्य है।''

यद्यपि स्वाध्याय या स्वाध्याय रूप धर्मध्यान भी हमें करना ही है; तथापि अभी हम यहाँ उस धर्मध्यान की बात कर रहे हैं कि जो मुक्तिमार्ग में आता है और जिसे तीर्थंकर दीक्षा लेने के बाद आजीवन मौनव्रत धारण करके एकान्त में करते हैं। आत्मानुभूति प्राप्त करने के लिये भी जो आवश्यक है, अनिवार्य है। सम्यक्त्व प्राप्त होने के पूर्व जिनका होना आवश्यक है, ऐसे करणलब्धि रूप परिणाम भी जिसका एक रूप है।

उक्त ध्यान का क्या स्वरूप है? वह कैसे किया जाता है? क्योंकि कुछ करने, बोलने और सोचने का तो उक्त ध्यान में निषेध किया गया है।

परमध्यान का स्वरूप जो मुनिवर श्रीनेमिचन्द्रसिद्धान्तिदेव ने द्रव्यसंग्रह में प्रस्तुत किया है; वह इसप्रकार है –

(गाथा)

मा चिट्ठह मा जंपह मा चिंतह किं वि जेण होइ थिरो।
अप्पा अप्पम्मि रओ इणमेव परं हवेज्झाणं ॥५६॥

(हरिगीत)

बोलो नहीं सोचो नहीं अर चेष्टा भी मत करो।
उत्कृष्टतम यह ध्यान है निज आतमा में रत रहो॥ ५६॥

कुछ भी चेष्टा मत करो, कुछ भी मत बोलो और कुछ भी चिन्तवन मत करो। इससे अपना आत्मा निजात्मा में तल्लीन होकर स्थिर हो जायेगा। यही स्थिरता ही परमध्यान है।

उक्त गाथा की टीका लिखते हुये श्री ब्रह्मदेव लिखते हैं–

''हे विवेकीजनो! नित्य, निरंजन और निष्क्रिय निज शुद्धात्मा की अनुभूति को रोकने वाले शुभाशुभ चेष्टारूप काय व्यापार, शुभाशुभ अन्तर्बहिर्जल्परूप वचन व्यापार और शुभाशुभ विकल्पजालरूप चित्त व्यापार रंचमात्र भी मत करो।

ऐसा करने से यह आत्मा तीन योग के निरोध से स्वयं में स्थिर होता है।''

देखो, यहाँ टीकाकार ब्रह्मदेव शुभाशुभ काय चेष्टारूप व्यापार, शुभाशुभ अन्तर्बहिर्जल्परूप वचन व्यापार और शुभाशुभविकल्पजल्परूप चित्त (मन) व्यापार को शुद्धात्मा की अनुभूति को रोकने वाला बता रहे हैं; क्योंकि ध्यान शुद्धभाव रूप है और शुभाशुभ भाव अशुद्धभावरूप हैं।

आगे टीका में लिखते हैं –

''सहज शुद्ध ज्ञान–दर्शनस्वभावी परमात्म तत्त्व के सम्यक् श्रद्धान–ज्ञान–आचरणरूप अभेद रत्नत्रयात्मक परमसमाधि से उत्पन्न, सर्वप्रदेशों में आनन्द उत्पन्न करनेवाले सुख के आस्वादरूप परिणति सहित, निजात्मा में रत–परिणत–तल्लीन–तच्चित्त–तन्मय होता है।

आत्मा के सुखस्वरूप में तन्मयपना ही निश्चय से परमध्यान है, उत्कृष्ट ध्यान है। उस परमध्यान में स्थित जीवों को जिस वीतराग परमानन्दरूप सुख का प्रतिभास होता है, वही निश्चयमोक्षमार्गस्वरूप है।

वह अन्य किस–किस पर्यायवाची नामों से कहा जाता है; अब यह कहते हैं –

वही शुद्धात्मस्वरूप है, वही परमात्मस्वरूप है, वही एकदेश–प्रगटतारूप विवक्षित–एकदेश–शुद्धनिश्चयनय से स्वशुद्धात्मा के संवेदन से उत्पन्न सुखामृतरूपी जल के सरोवर में रागादिमल रहित होने के कारण परमहंसस्वरूप है।

इस एकदेश व्यक्तिरूप शुद्धनय के व्याख्यान को परमात्म–ध्यान–भावना की नाममाला में यथासंभव सर्वत्र योजन करना।

वही परब्रह्मस्वरूप है, वही परमविष्णुस्वरूप है, वही परमशिवस्वरूप है, वही परमबुद्धस्वरूप है, वही परमजिनस्वरूप है, वही परमस्वात्मोप–लब्धिलक्षण सिद्धस्वरूप है, वही निरंजनस्वरूप है, वही निर्मलस्वरूप है।

वही स्वसंवेदनज्ञान है, वही परमतत्त्वज्ञान है, वही शुद्धात्मदर्शन है, वही परमावस्थास्वरूप है।

वही परमात्मा का दर्शन है, वही परमात्मा का ज्ञान है, वही परमावस्थारूप परमात्मा का स्पर्शन है, वही ध्येयभूत शुद्धपारिणामिक–भावरूप है, वही ध्यानभावनास्वरूप है,

१. आचार्य समन्तभद्र : रत्नकरण्ड श्रावकाचार, श्लोक १० उत्तरार्द्ध।

वही शुद्धचारित्र है, वही परमपवित्र है।

वही अंतःतत्त्व है, वही परमतत्त्व है, वही शुद्धात्मद्रव्य है, वही परमज्योति है, वही शुद्ध आत्मा की अनुभूति है, वही आत्मा की प्रतीति है, वही आत्मा की संवित्ति है, वही स्वरूप की उपलब्धि है, वही नित्यपदार्थ की प्राप्ति है, वही परमसमाधि है।

वही परमानन्द है, वही नित्यानंद है, वही सहजानंद है, वही सदानंद है, वही शुद्धात्मपदार्थ के अध्ययनरूप है, वही परमस्वाध्याय है, वही निश्चय मोक्ष का उपाय है, वही एकाग्रचिंतानिरोध है, वही परमबोध है, वही शुद्धोपयोग है, वही परमयोग है।

वही भूतार्थ है, वही परमार्थ है, वही निश्चय पंचाचार है, वही समयसार है, वही अध्यात्मसार है, वही समता आदि निश्चय-षड्-आवश्यक स्वरूप है, वही अभेदरत्नत्रय स्वरूप है, वही वीतराग सामायिक है।

वही परम शरण-उत्तम-मंगल है, वही केवलज्ञान की उत्पत्ति का कारण है, वही समस्त कर्मों के क्षय का कारण है, वही निश्चय-चतुर्विध-आराधना है, वही परमात्मा की भावना है, वही शुद्धात्मा की भावना से उत्पन्न सुख की अनुभूतिरूप परमकला है, वही दिव्यकला है, वही परम अद्वैत है।

वही परम अमृतरूप परमधर्मध्यान है, वही शुक्लध्यान है, वही रागादिविकल्परहित ध्यान है, वही निष्कल ध्यान है, वही परम स्वास्थ्य है, वही परम वीतरागपना है, वही साम्य है, वही परम एकत्व है, वही परम भेदज्ञान है, वही परम समरसीभाव है।

इत्यादि समस्त रागादि विकल्प-उपाधि से रहित परम-आह्लादरूप एक सुख जिसका लक्षण है - ऐसे ध्यानरूप निश्चय-मोक्षमार्ग के वाचक अन्य भी पर्यायवाची नाम परमात्मतत्त्व के ज्ञानियों द्वारा जानने योग्य हैं।।५६।।''

उक्त सम्पूर्ण स्पष्टीकरण से एक बात तो अत्यन्त स्पष्ट ही है कि यद्यपि आत्मध्यान, समाधि, स्वसंवेदनज्ञान, आत्मानुभूति, शुद्धोपयोग, वीतरागसामायिक आदि पद (शब्द, नाम) एकमात्र उक्त ध्यान के ही वाचक हैं, प्रतिपादक हैं; तथापि आत्मानुभूति, आत्मध्यान, सामायिक और शुद्धोपयोग - ये नाम अधिक प्रयोग में आते हैं। **(क्रमशः)**

मुक्त विद्यापीठ के छात्रों हेतु सूचना

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) के **प्रथम सेमेस्टर की परीक्षायें जून 2019 के अंतिम सप्ताह में होने जा रही है।** परीक्षा के एक सप्ताह पूर्व (लगभग 25 जून तक) सभी परीक्षार्थियों को एनरोलमेंट नम्बर व प्रश्नपत्र भेज दिए जावेंगे। जिन परीक्षार्थियों ने अभी भी परीक्षा की तैयारी शुरु नहीं की है, वे शीघ्र तैयारी में जुट जावें। परीक्षा कार्यक्रम निम्नानुसार है -

परीक्षा कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा (प्रथम सेमेस्टर)

प्रथम वर्ष (उपाध्याय कनिष्ठ)

1. **प्रथम प्रश्नपत्र** : वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग-1
2. **द्वितीय प्रश्नपत्र** : छहढाला (70 अंक) + सत्य की खोज (30 अंक)

द्वितीय वर्ष (उपाध्याय वरिष्ठ)

1. **प्रथम प्रश्नपत्र** : तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1
2. **द्वितीय प्रश्नपत्र** : लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा (प्रथम सेमेस्टर)

प्रथम वर्ष -

1. **प्रथम प्रश्नपत्र** : गुणस्थान विवेचन
2. **द्वितीय प्रश्नपत्र** : क्रमबद्धपर्याय (70 अंक) + सामान्य श्रावकाचार (30 अंक)

द्वितीय वर्ष -

1. **प्रथम प्रश्नपत्र** : समयसार-पूर्वरंग और जीवाजीवाधिकार
2. **द्वितीय प्रश्नपत्र** : गोम्मटसार कर्मकाण्ड -प्रथम अध्याय

तृतीय वर्ष -

1. **प्रथम प्रश्नपत्र** : समयसार-कर्ताकर्माधिकार
2. **द्वितीय प्रश्नपत्र** : गोम्मटसार जीवकाण्ड-गाथा 70 से 215 तक (97 से 112 गाथा छोड़कर)

ध्यान रहे - परीक्षा बोर्ड कार्यालय से जानकारी चाहने हेतु परीक्षार्थी अपना एनरोलमेंट नम्बर, नाम, स्थान एवं विषय का उल्लेख अवश्य करें; ताकि आपके द्वारा चाही गई जानकारी शीघ्र मिल सके।

- नीशू शास्त्री (प्रबंधक) 9785645793

(पृष्ठ 5 का शेष...)

क्रमबद्धपर्याय एवं युवा पीढी का सदाचार विषय पर गोष्ठियों का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय विद्वानों के अतिरिक्त पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल एवं पण्डित अभिषेकजी शास्त्री रायपुर की विशेष उपस्थिति रही।

शिविर में स्थानीय शास्त्री विद्वानों द्वारा सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ।

● **(भूल सुधार -** विगत 17 मई, 2019 के अंक में 19वें जैनत्व बाल संस्कार शिविर, इन्दौर के समाचार में स्थान का नाम भूलवश गलत (सन्मति स्कूल नौलखा) छप गया था, उसके स्थान पर साधना नगर पढा जावे।)

कनिष्ठ उपाध्याय का परीक्षा परिणाम

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर सत्र 2018-2019 की उपाध्याय कनिष्ठ परीक्षा में कुल 32 छात्रों ने परीक्षा दी, जिसमें 23 छात्र प्रथम, 7 द्वितीय व 2 तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। प्रथम तीन स्थान प्राप्त विद्यार्थी इसप्रकार हैं -

- **सर्वज्ञ जैन पुत्र श्री राकेशकुमारजी जैन, गुढाचन्द्रजी** (87.1%)।
- **चेतन जैन पुत्र श्री दयाचंदजी जैन, गुढाचन्द्रजी** (85%)।
- **अरविन्द जैन पुत्र श्री आनन्दकुमारजी जैन, खड़ैरी** (84.9%)।

वरिष्ठ उपाध्याय का परीक्षा परिणाम

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर सत्र 2018-2019 की उपाध्याय वरिष्ठ परीक्षा में कुल 42 छात्रों ने परीक्षा दी, जिसमें से 41 उत्तीर्ण हुए; 35 छात्र प्रथम, 5 द्वितीय व 1 तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ। प्रथम तीन स्थान प्राप्त विद्यार्थी इसप्रकार हैं -

- **यश जैन पुत्र श्री योगेशकुमारजी जैन, खुरई** (87.6%)।
- **अभिषेक जैन पुत्र श्री अरुणकुमारजी जैन, देवराहा** (83.6%)।
- **अनिमेष जैन पुत्र श्री चेतनजी जैन, राघौगढ** (83.6%)।
- **शाश्वत जैन पुत्र श्री राजीवजी जैन, भोपाल** (82.8%)।

इस उपलक्ष्य में टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

वरिष्ठ उपाध्याय में प्रथम स्थान

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर की वरिष्ठ उपाध्याय (12वीं) परीक्षा में उदयपुर (राज.) निवासी **हर्षिता जैन** ने संपूर्ण राजस्थान में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। ज्ञातव्य है कि हर्षिता स्व. श्री रामकिशनजी जैन की सुपौत्री, खेमचंदजी शास्त्री व नीलम जैन की सुपुत्री, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली व शुद्धात्मप्रकाशजी मुम्बई की भतीजी एवं डॉ. चिन्मयजी शास्त्री व पण्डित दुर्लभजी शास्त्री की बहन है। इस उपलक्ष्य में संस्था हेतु 1100 रुपये प्राप्त हुये।

टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा
श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर में

42वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(शुक्रवार, दिनांक 2 अगस्त से रविवार 11 अगस्त, 2019 तक)

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का 42वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर पण्डित टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दिनांक 2 अगस्त से 11 अगस्त तक लगने जा रहा है।

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा। शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

शिविर में पधारने हेतु आप सभी सपरिवार
सादर आमंत्रित हैं।

-: संपर्क सूत्र :-
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन : 0141-2705581, 2707458

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

7 जून से 6 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
2 से 11 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
26 अग. से 2 सित.	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण

प्रकाशन तिथि : 13 मई 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com